दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-8
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

DTVF / OPT-23 **HL-2308**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2208 , 10/08/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS.***

Candidate has to attempt ***FIVE*** *questions in all.*

Questions no. ***1*** *and* ***5*** *are compulsory and out of the remaining, any* ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in ***HINDI*** *(Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कहानी के दौर की "एक नाव के यात्री" से ली गई हैं जिनकी रचना शानी ने की है।

प्रसंग - मानवीय संबंधों के टूटने के बारे में बताया गया है कि कैसे बाहर जाकर बच्चे अपने माता पिता को भूल जाते हैं।

व्याख्या - दुनिया में सब कुछ यूँ ही चलता रहता है। इसमे बताया गया ~~था~~ है कि मनुष्य कब तक खुद से लड़ सकता है अन्त. एक समय पर आकर तो हार मान ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लेता है।

विशेष

- "एक नाव के यात्री" एक दुनिया समानांतर की प्रतीनीधि कहानी है
- सरल, प्रवाहमयी भाषा बोली का प्रयोग
- उपमा शैली, प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। (कीमती वस्तु टूट जाने पर भी मोह नही जाता)
- आधुनिक समय में घर में अकेले रह गये माता-पिता का मार्मिक वर्णन किया है।
- पारिवारिक संबंधों को दिखाया गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - दी गई पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्ट के निबंध "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" से ली गई है जिसमें साहित्य के महत्व को रेखांकित किया गया है।

प्रसंग - भारतीय धार्मिक संस्कृति के पक्ष, विपक्ष पर विचार करते हुए वैदिक सम्प्रदाय के न रहने की ओर संकेत करती है।

व्याख्या - हिन्दू जाति की विशेषताओं को विशेषताओं को बताते हुये प्रायः वैदिक सम्प्रदाय के न रहने पर कैसे संस्कृति परिवर्तित हुई उसका वर्णन किया जा रहा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कैसे हिन्दू जाति आगे विभाजित होती गई उसमें असंख्य सम्प्रदायों ने जन्म लिया को बताया जा रहा है

विशेष

•) साहित्य के महत्व को प्रदर्शित करा जा रहा है यह वही दृष्टिकोण है जो गुप्त जी का मानते आते हैं है "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए"

•) भाषा, खड़ीबोली है

•) सूत्र शैली "एक नारी दो से कोंली जैसे तन्तर बेले अलसी"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

सन्दर्भ — प्रस्तुत पंक्तियाँ मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल के उपन्यास "दिव्या" से ली गई है "दिव्या" ऐतिहासिक परिवेश में स्त्री नियति की गाथा है

प्रसंग — प्रस्थु अपने पुत्र पृथुसेन को स्त्री मोह त्यागने के लिए प्रेरित कर रहा है

व्याख्या — प्रेस्थ, पृथुसेन से दिव्या को त्यागने के लिए कह रहा है तथा स्त्री जी के कारण राज्यों के नाश हो जाने का उदाहरण दे रहा है साथ ही कौटिल्य के माध्यम से अपनी बात को और प्रमाणिक करते हुए कहता है स्त्री भोग्य वस्तु है जीवन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का साधनमात्र है

विशेष

- सरल, एवं बोधगम्य भाषा
- प्रेम नामक से नारी के अवमूल्यन को प्रदर्शित किया गया है
- नारी के प्रति मांगवादी नजरिया प्रदर्शित किया गया है जो मैला आंचल की इस प्रकार है-

"जोरू जमीन जोर की नहीं तो किसी और की"

- बौद्धकालीन परिवेश में नारी स्थिति की समीक्षा की गयी है
- सूत्र शैली का प्रयोग किया गया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है जिसमें व्यक्ति की आतंरिक एवं बाहरी मनोदशा को अभिव्यक्त किया गया है

व्याख्या - द्विवेदी जी ने लिखा है तथा निबंध में बता रहे है मैं अपनी मान्यताओं पर खड़ा हूँ लहूलुहान हूँ लोग मुझे मार रहे है साथ ही एक नंगी औरत के शरीर को लोग खुरदरे सूत से बांध रहे है जो लाचारी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष

·) भाषा की मिश्र स्थिति को दिखाया जा रहा है जो मैला आन्चल में भी दिखता है।

जोत जमीन जोरू की, नहीं तो किसी और की

(·) विराम चिन्हों का प्रयोग किया गया है जिससे लिखित भाषा, मौखिक भाषा के समान संप्रेषण कर रही है।

·) खड़ीबोली, प्रयोग किया गया है

·) उपमा एवं प्रतीक शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ।

·) सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है। (मैं बड़ा हूँ मान्यताओं की सलीब पर)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ महान नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई है जिसकी 1918 में की गई है।

प्रसंग - स्कन्दगुप्त ऐतिहासिक वातावरण में तत्कालीन समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है।

व्याख्या - देवसेना पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखाया है जहाँ वह प्रत्येक परमाणु में ईश्वर मेल की अनुभूति को बया करती है। प्रकृति के कण-कण में एवं प्रकृति में सम्पूर्ण लय से ईश्वर की ही अभिव्यक्ति है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

- जयशंकर प्रसाद पर "नव्य वेदान्त" का प्रभाव देखा जाता है।
- यही दृष्टिकोण कामायनी की श्रद्धा का है। वह भी कण-कण ईश्वर की अनुभूति को मानती है।
- तत्सम, प्रवाहमयी भाषा है।
- उपमा, सूत्रशैली का प्रयोग किया गया है। (प्रत्येक पदबंध के अन्त में लय है)
- जयशंकर प्रसाद पर प्रत्यभिज्ञा दर्शन एवं बौद्धों के क्षणिकवाद के क्षणिक परिवर्तन का प्रभाव दिखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जिंदगी और जोंक" अमरकांत द्वारा रचित नई कहानी आन्दोलन की कहानी है जिसका संकलन राजेन्द्र प्रसाद ने "एक दुनिया समानान्तर" में किया है।

"जिंदगी और जोंक" उत्तम शैली में लिखी कहानी है जिसमें मुख्य चरित्रों में प्रायः मैं और रजुआ साला के रूप में कहानी को कथ्य बनाया गया है।

अमरकांत नयी कहानी आंदोलन के दौर के लेखक हैं अमरकांत जी ने जिंदगी और जोंक में विभिन्न पक्षों को उठाया है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पक्ष महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सामाजिक स्तर पर अमरकांत ने 60 के दशक के सामाजिक परिवेश को दिखाया है कि कैसे सभी लोग दिखावटी एवं मतलबी किस्म का जीवन जीते हैं। जो रजुआ को साथी चुराने के झूठे प्रसंग में पीटा जाता है। जाति का सन्दर्भ देते हुए अमरकांत ने निम्न जाति के लोग एवं रजुआ के उनसे संबंधों को दिखाया है कि कैसे वह निम्न जाति में जाता बैठता एवं उनकी औरतों से मजाक करता है।

अमरकांत जी ने कहानी में अभाव ग्रस्त व्यक्ति की जिजीविषा, कठिनाइयों एवं शोषण को उजागर किया है जो कथ्य के आधार पर पुरानी कहानियों से अलग है। साथ ही शहरों में व्याप्त स्पर्धा, ईर्ष्या, व्यक्तिवादिता आदि को दिखाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जिंदगी और जोंक। अपने कथ्य एवं कथानक के आधार पर नयी कहानियों से थोड़ा अलग है इसमें कथानक उतनी नहीं हुआ जितना "खोई हुई दिशाएं" में हुआ था।

शिल्प के स्तर पर अन्य पक्षों में चरित्र-योजना एकदम स्वाभाविक है किसी भी चरित्र को अच्छा या बुरा नहीं दिखाया बल्कि अच्छाई, बुराई का संघात मिश्रण दिखाया है।

भाषाशैली सहज बोलचाल की, अंग्रेजीपन भी है तत्सम शब्दों का प्रयोग भी है जहां रजुआ सबको ज्ञान देता फिरता है। व्यंग्यात्मक एवं सूत्रशैली का भी प्रयोग हुआ है।

"पता नहीं वो जिंदगी से चिपका है या जिंदगी जिंदगी उससे"

सहज अन्तर्द्वंद्व भी दिखाया गया है जो नयी कहानी की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सामान्य विशेषता है 'मैं' के मन के अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया गया है जहाँ वे सोचते है कि रज्जुआ को रखेगा आगे या नहीं या फिर उसको कुछ पता करे या नहीं।

समग्र रूप से कह सकते है कि अमरकांत, इसमें एक नया कथ्य लेकर चले है तथा एक अभाव व्यक्ति के व्यक्ति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक पक्षों पर भी प्रकाश डालते चले है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

स्कंदगुप्त नाटक की रचना 1928 में जयशंकर प्रसाद ने की थी। जिसमें गुप्त वंशीय शासक स्कन्दगुप्त को कथा का आधार बनाते हुए अपने समय की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति को दिखाया गया है।

जयशंकर प्रसाद ने इस नाटक का नाम स्कंदगुप्त ही क्यों रखा तथा अन्य नाम क्या हो सकता था। सामान्यतः रचना के नामकरण में निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है

- लेखक के मंतव्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता हो।
- संक्षिप्त एवं सारगर्भित हो
- जिज्ञासा उत्पन्न करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्कंदगुप्त नाटक चरित्र प्रधान नाटक है जिसमें स्कन्दगुप्त को केन्द्र में रखकर नाटक रचा गया है जिस कारण इसका नाम स्कंदगुप्त रखा गया है।

अन्य नाम पर नजर डाले तो स्कंदगुप्त के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरित्र देवसेना है जो जयशंकर प्रसाद की (कामायनी) श्रद्धा के समान है तथा जिसमें त्याग, राष्ट्रप्रेम की भावना है जो प्रसाद जी की आदर्श नारी है जैसे ~~श्रद्धा~~ (नारी तुम ~~श्रद्धा~~ हो) में दिखाया है। किन्तु देवसेना नाटक के पूर्ण प्रतिपाद्य को नहीं समझा पाती है।

अन्य नामों में हूणों का आक्रमण, गुप्त वंशीय राजसिंहासन आदि हो सकता था हालांकि वे नाम भी लेखक के प्रतिपाद्य को पूर्ण रूप से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्पष्ट नहीं कर पाते अतः ~~यह~~ यह कहा जा सकता है कि स्कन्दगुप्त ही इस नाटक का उचित है जो लेखक के प्रतिपाद्य को भी स्पष्ट करता है साथ नाटक का केन्द्रीय चरित्र भी है जिसने आर्यावर्त पर आये सारे संकट को हटा दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक की रचना महान नाटककार मोहन राकेश ने की है। जिसमें कालिदास को नाटक का कथ्य बनाते हुए वर्तमान समय के आधुनिक मानव की स्थिति एवं ~~[illegible]~~ अंतर्द्वन्द को दिखाया गया है।

~~AKE~~ आषाढ़ का एक दिन की उपलब्धि है कि यह शहरी मन के व्यक्ति में व्याप्त आत्मनिर्वासन, एवं विसंगतिबोध को परिलक्षित करता है। सार्त्र, कामू के अस्तित्ववाद का प्रभाव नाटक पर पड़ता है जहां व्यक्ति "जो मैं हूँ और मुझे होना चाहिए" में निरंतर द्वंद्व चलता रहता है यही द्वंद्व कालिदास के माध्यम से दिखाया है
"न ही पहचानती है और न पहचानना ही स्वाभाविक है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यही आत्मनिर्वासन आज के समय की भी समस्या है प्रत्येक व्यक्ति बाहरी दबावों से लिये गये निर्णय के कारण आत्म प्रवंचना का शिकार है

पूंजीवाद, औद्योगीकरण के वर्तमान युग में जहाँ सभी लोग आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए बाहर जाते हैं किन्तु उन्हें अपना परिवेश, आत्मीयता छोड़नी पड़ती है जिसकी कमी उन्हें जीवन भर खलती है। यही समस्या कालिदास की है "सत्ता के लोभ में उज्जयिनी गया किन्तु आत्मीयता नहीं मिली"

आज का व्यक्ति उपलब्धियों की लालसा में बाहरी दबाव से निर्णय लेता है जीवन भर जो वह है, जो उसे होना चाहिए में डूबा रहता है
"मैं वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आषाढ़ का एक दिन आज का तथा आज के लिये नाटक है स्वभाकर्म के दौर में जो आत्मनिर्वासन दिखाया गया है वह आज और गहरा हो गया है तथा कालिदास की जो मन स्थिति वह उस हर उस व्यक्ति की स्थिति है जो धन कमाने या पढ़ने की लालसा में अपने परिवेश से दूर चला जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ - दी गई पंक्तियाँ रामचन्द्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से ली गई है।

प्रसंग - पंक्तियों में कविता के महत्व के महत्व के साथ ही मानव मन के भावों एवं जिज्ञासाओं पर टिप्पणी की गई है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते है कि प्रश्न के उत्तर की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रश्न तक कहाँ तक पहुँचे है दूसरे शब्दों में कहे तो ऐसे प्रश्न प्रश्न का उत्तर मन मन की जिज्ञासा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मैं जीवित रहता है।

विशेष

·) सरल, बोधगम्य खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

·) विराम चिह्नों का सुन्दर प्रयोग किया गया है

·) कविता के महत्व को रेखांकित किया गया है यही भाव साहित्य के प्रति गुप्त जी का है

·) सूत्र शैली का सुन्दर प्रयोग किया गया है

·) कविता क्या है शुक्ल जी ने कविता के सामाजिक जीवन में महत्व को रेखांकित किया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

संदर्भ - व्याख्येय पंक्तियाँ एक डायरी समानान्तर में संकलित कहानी 'विजेता' से ली गई है जिसमें रचयिता रवियुज सहाय है।

प्रसंग - गर्भपात का मार्मिक वर्णन किया गया है अंत में बार बार प्रयास करने पर भी गर्भपात न होने के बाद का जिक्र किया गया है

व्याख्या - बार-बार दवाई खिलाने के बाद भी गर्भपात के न होने के बाद, प्रायः पत्नि अपने पति से बच्चे को जन्म देने के लिए कहती है। वे कह रही है जिसने इन आक्रमणों के बाद भी खुद को बचाये रखा है उसे जिंदगी जीने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

का पूर्ण आधिकार है इसे इस दुनिया में आना ही चाहिए।

विशेष

- गर्भपात की समस्या का वर्णन किया गया है।
- आजादी के बाद की समस्या को दिखाया गया है कि गर्भपात जैसे मामलों पर पति पत्नी के विचारों को दिखाया है।
- खड़ीबोली का सुन्दर प्रवाहमयी उपयोग किया गया है।
- उपमा शैली का प्रयोग हुआ है (तुम उस पर आक्रमण कर चुके हैं)
- सूत्र शैली (यह प्रमाणित करता है कि वह है)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शमशेर की जिन्दगी से बहुत उम्मीदें लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कहानी आन्दोलन की प्रतिनिधि कहानी परिंदे से ली गई है जिसके रचयिता "निर्मल वर्मा" है

प्रसंग - पंक्तियों में किसी अंजान देश में मरने के डर को दिखाया जा रहा है।

व्याख्या - पंक्तियों में दिखाया जा रहा है कुछ लोग मृत्यु के प्रति बेफिक्र रहते हैं कुछ लोग अन्त तक पहेली की तरह रहते हैं। जैसे उन्हें उम्मीद ज्यादा ही रहती है वही एक गिने लोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रहते है जो अन्तिम क्षणो तक उन्हे मरने का अहसास नहीं होता।

विशेष

- शुद्ध खड़ीबोली, प्रवाहमयी भाषा
- मरने के बारे में यही विचार जिंदगी और जोकें में देखे है
  "पता नहीं वो जिंदगी से चिपका है या जिंदगी उससे"
- उपमा शैली का प्रयोग तथा प्रतीक शैली प्रयोग (पहेली से रहते है)
- अस्तित्व वादी दर्शन के बातों का जिक्र मिलता है जो जीवन के अन्तिम में भी परिलक्षित होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

संदर्भ - व्याख्येय पंक्तियाँ महान नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा 1928 में रचित "स्कन्दगुप्त" नाटक से ली गई है।

प्रसंग - पंक्तियों में देवसेना के राष्ट्रप्रेम को दिखाया गया है कैसे वो राष्ट्रप्रेम के लिए अपने प्रेम को त्यागती है

व्याख्या - देवसेना स्कन्दगुप्त से कहती है कि जब राष्ट्र के ऊपर संकट आ गया है उन स्थिति में प्रेम पर विचार करना मूर्खता है। अतः स्कन्दगुप्त से क्षमा मांगती है तथा स्कन्दगुप्त को भी युद्ध करने की प्रेरणा देती है तथा सुख को क्षणिक सुख बताती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

-) देवसेना में प्रसाद ने छायावादी तेवर का दिया है जो प्रेमचंद के गोदान की मालती की तरह अविवाहित रहने का निर्णय लेती है

-) बौद्ध धर्म के "क्षणिक दुख" जैसे विचारों का प्रभाव पड़ा है

-) ऐतिहासिक परिवेश के कारण भाषा तत्सम है। किन्तु बोधगम्य है

-) सूत्र शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है। "मैं जीवन के देवता, और उस जीवन के प्राप्य" क्षमा"

-) जयशंकर प्रसाद पर प्रत्यभिज्ञा दर्शन का असर रहा है स्कन्दगुप्त नाटक में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) संभवत: पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ महान नाटककार मोहन राकेश के नाटक "आषाढ़ का एक दिन से ली गई है

प्रसंग - कालिदास को तीसरे अंक में सफाई देने का मौका मिला है तब वह मल्लिका से निम्न बातें कहते हैं

व्याख्या - कालिदास जब मल्लिका के पास आता है। मल्लिका शुरुआत में उसे पहचानती नहीं है तब कालिदास कहता है नहीं पहचानती हो न पहचानना ही स्वाभाविक है मैं अब वह व्यक्ति न रहा जिसे तुम जानती थी, और अब मैं जो हूँ मैं खुद को भी नहीं पहचानता कि मैं ही हूँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विशेष

•) सार्त्र, काम्यू के अस्तित्ववाद का प्रभाव नजर आता है जहाँ व्यक्ति में "जो मैं हूँ जो मुझे होना चाहिए में बीच द्वंद्व चलता रहता है"

•) कालिदास में विसंगतिबोध, आत्मनिर्वासन दिखाया गया है जो नयी कहानी की विशेषता है।

•) कालिदास यहाँ एक और जिंदगी का राकेश की तरह आधे अधूरेपन का शिकार है

•) तत्समी भाषा है बोधगम्य सरल, सहज है

•) कालिदास एक अर्थ में वर्तमान समय के विसंगतिबोध, आत्मनिर्वासित व्यक्ति है

•) सार्त्र, काम्यू के अस्तित्ववाद का प्रभाव नजर आता है

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मैला आंचल हिन्दी का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है। जिसकी रचना 1954 में फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा की गई है। आने वाले आंचलिक उपन्यासों के लिए भी इसी ने मानदण्ड रचे थे।

आंचलिक उपन्यास अपने गहन आंचलिकता एवं स्थानीयता के कारण क्षेत्र विशेष तक सीमित रहते हैं किन्तु "मैला आंचल" इस अर्थ में एक कदम आगे की रचना है जो आंचलिकता में भी राष्ट्रीयता का अनुभव कराती है।

मैला आंचल में दिखाई गई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक वर्णन पूरे देश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

में समान रूप से देखने को मिलते हैं तथा रेणु जी ने स्वयं प्राक्कथन में लिखा है।
"मैरीगंज के प्रतीकात्मक माध्यम से यह देश के हर पिछड़े गांव का उपन्यास है"

भारतीय समाज उत्सवधर्मी समाज है जहाँ समय एवं बात-बात पर त्योहार का आयोजन होता है जैसे गाड़ी हाँकते हुये भजनियाँ के गीत गाना, बारीश न होने पर इन्द्र देवता को खुश करने के लिये जाट-जाटिन का खेल ऐसा सांस्कृतिक पक्ष पूरे देश में दिखता है।

राजनीतिक स्तर पर सबसे बड़े दलों का जिक्र है काँग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी, साथ ही राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, अपराधीकरण को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दिखाया है ऐसे ही पूरे देश में राज० का हाल है
"सोमा जाट एवं चलित्तर कर्मकार जैसे को पार्टी में शामिल की गई है"

धार्मिक स्तर पर
मठ धर्म का संस्थानीकरण किन्द्र है एवं महंत साहब धर्म के प्रतिनिधि है साथ धर्म में व्याप्त विसंगति को भी दिखाया है जो लगभग सम्पूर्ण भारत में एक समान रूप से मिलती है। इस प्रकार दिखाया है "महंत जब लछमी को मठ पर लाये तब वह एकदम अबोध कन्या है"

आर्थिक स्तर पर
ग्रामीण समाज के पिछड़ेपन को उजागर किया है प्रशांत डॉ० कहते है - जिस व्यक्ति के लिये जीवन का अर्थ भूख एवं बेबसी है उसके लिये ये दवाइयाँ किसी काम को नहीं है साथ ही ग्रामीण परिवेश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में व्याप्त अंधविश्वास को जोतखी काका के माध्यम से दिखाया है-

"डॉ० लोक्का ही रोग फैलाते हैं बुरे शोषक देह में जहर देते हैं"

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था ग्रामीण समाज की धुरी होती है इसमें भी दिखाया गया है गांव में तीन प्रमुख ~~जाति~~ जाते है- पासव, राजपूत, कायस्थ ।

इसके अलावा किसान समस्या, रोगों की समस्या, पितृसत्तात्मक मानसिकता (जोरू जमीन जोर की) आदि को भी दिखाया है जिस कारण मैला आंचल ने राष्ट्रीयता का पर्याप्त परिचय दिया है जहां गोदान ने राष्ट्रीयता को मैक्रोलेवल स्तर पर दिखाया है वही मैला आंचल ने माइक्रो स्तर में दिखता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

अलग्योझा प्रेमचंद द्वारा 1929 में रचित कहानी है जिसमें प्रेमचन्द ने जटिल कथानक पर आधारित संयुक्त परिवार के महत्व को रेखांकित किया है।

अलग्योझा प्रेमचन्द की आदर्शोन्मुख यथार्थवाद पर आधारित कहानी है जिसमें ग्रामीण एवं पारिवारिक समस्या को यथार्थ रूप से वर्णित किया गया है साथ ही समाधान में रूप पक्ष को महत्व दिया है

कहानी की शुरुआत भोला महतो से होती है जिसने पन्ना से दूसरी शादी की तथा रग्घू को बड़े बेटे के रूप में घर की जिम्मेदारी उठानी पड़ी, रग्घू की पत्नी मुलिया की इच्छा के कारण रग्घू घर से अलग हो गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कथानक के स्तर पर अलग्योझा प्रेमचंद की पूर्व कहानी से अलग है इसमें जटिल कथानक है तीन कहानी ~~साथ~~ - चलती है भोला महतो, रग्घू, केदार की कहानी

प्रेमचंद का आदर्शवाद

इस कहानी पर हावी रहा आता है अंत में संयुक्त परिवार के महत्व को रेखांकित करते हुये पारिवारिक समस्याओं का समाधान हृदय परिवर्तन के माध्यम से ही दिखाया है।

शिल्प के स्तर पर

कहानी में प्रेमचंद ने बेहतर संतुलन साधा है इसमें न तो रानी सारंधा की तरह तत्सीपन है न ही ईदगाह, "शतरंज के खिलाड़ी" की फारसीपन है अलग्योझा में हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग किया गया है जो गांधी जी के सपनों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की राष्ट्रीय भाषा है।

साथ ही प्रेमचंद ने सूत्र एवं उपमा शैली का सुन्दर प्रयोग किया है।

"पन्ना रूपवती स्त्री थी और रूप एवं गर्व में चोली दामन का संबंध होता है"

अलग्योझा

में प्रेमचंद ने अपने पूर्ववर्ती कहानियों से कथानक के स्तर पर परिवर्तन किया, किंतु यहाँ तक प्रेमचंद आदर्शवाद को छोड़ नहीं सके, इसलिये अलग्योझा प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थ पर आधारित कहानी है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महाभोज उपन्यास नवलेखन दौर की सशक्त ~~[illegible]~~ रचनाकार मन्नू भण्डारी जी का है जिसकी रचना 1979 ई० में हुई थी। इसमें मन्नू भण्डारी ने राजनीतिक विद्रूपताओं का पर्दा ~~[illegible]~~ फाश किया है

नाटकीयता नाटक का गुण होता है किन्तु समर्थ रचनाकार गद्य में भी नाटकीयता ला देता है। महाभोज में भी लेखकीय संयम, एवं कौशल के कारण नाटकीयता दिखती है।

नाटकीय सस्पेंस - नाटक प्रायः किसी सस्पेंस से शुरू होते है जो दर्शक में जिज्ञासा ला देता है ऐसा ही सस्पेंस महाभोज की शुरुआती पंक्ति में दिखता है

"लावारिस लाश को गिद्ध नोचका-नोचका खा जाते है"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नाटकीय सेट - नाटक में जिस पर सेट तैयार किया जाता है तथा सेट के पर्याप्त संकेत दे दिये जाते है ऐसा ही अनुभव महाभोज में दिखता है-

"शिक्षामंत्री त्रिलोचन सिंह रावत की कोठी"

मनोभाव - नाटक में मनोभावों के लिए ~~[illegible]~~ पर्याप्त दिये जाते है जैसे हँसना, रोना, डरना आदि ऐसे ही मनोभाव को दिखाया गया है

"लोचन सिंह का बैंगनी चेहरा और बैंगनी हो उठा"

संवाद - संवाद, कथोपकथन नाटक को आगे बढाते है इस तरह या महाभोज में छोटे-चुस्त तथा गतिशील संवाद है।

~~सक्सेना~~ "सक्सेना - बिंदु तुम्हारा दोस्त था ना"

"बिंदा - नहीं दुश्मन"

सक्सेना - क्या दुश्मन"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रंगयोजना - नाटक की शुरुआत में ही रंगयोजना के संकेत दिये जाते हैं ऐसे ही महाभोज को दिये गये हैं।

अंतर्द्वंद्व - अंतर्द्वंद्व नाटकों को प्रभावशाली बनाते हैं महाभोज में ऐसे ही अन्तर्द्वंद्व परिलक्षित होते हैं जैसे सत्ता का द्वन्द्व, गाँव-शहर का द्वन्द्व, सक्सेना का आन्तरिक द्वन्द्व आदि।

मन्नू भण्डारी यथार्थवादी की भी लेखिका रही हैं परिणामस्वरूप महाभोज में भी नाटकीय तत्व परिलक्षित हुये हैं। हालाँकि महाभोज एक सफल उपन्यास है न की नाटक।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

भारत दुर्दशा 1875 ई० में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित लघु नाटक है जिसमें नवजागरण चेतना ~~एवं समाज~~ एवं देश की स्थिति के प्रति चिंता का भाव प्रदर्शित हुआ है। भारतेन्दु ने प्रतीकात्मक रूप से स्थितियों, एवं मनोभावों का प्रदर्शन कर अपने समय की समस्याओं को उठाया है।

भारत दुर्दशा में अन्त में भारत की त्रासदी मृत्यु एवं भारत भाग्य के मृत्यु के कारण भारत दुर्दशा को त्रासदी माना जाये या नहीं यह प्रश्न उठता है। देखते हैं यह त्रासदी है या नहीं।

त्रासदी पाश्चात्य

अरस्तू की परम्परा विरेचन को कहा गया है पाश्चात्य में विरेचन को ही नाटक का रस कहा गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

त्रासदी की कसौटियाँ

-) नायक उदात्त, भद्र एवं नैतिक पुरुष हो।

-) नायक द्वारा कोई ऐसी नैतिक भूल (हैमार्शीया) जिससे उसकी त्रासदी निर्मित हुई हो।

-) अन्त में नायक की पराजय या मृत्यु शेक्सपीयर के नाटक में ~~मृत्यु~~ प्राप्त होती थी हालांकि मृत्यु होना अनिवार्य नहीं है।

इनके आधार पर भारत दुर्दशा की त्रासदी की जांच करते हैं

नायक भद्र, उदात्त या नैतिक होने का प्रश्न है तो नायक कहीं से भी उदात्त नहीं है ~~बल्कि~~ उल्टा वह तो इतना डरपोक एवं कायर है कि खलनायक (भारतदुर्दैव) की आवाज सुनने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मात्र से बेहोश हो जाता है अतः उदात्त नायक की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है।

अब बात करें हैमार्शीया या नैतिक भूल की जिससे त्रासदी निर्मित निर्धारित की है तो नायक ने ऐसी कोई भूल नहीं की है बल्कि शुरू से अन्त तक वह बेहोश एवं डरा हुआ रहा है साथ ही नायक का ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ प्रतिनायक नायक से ज्यादा उदात्त है

अन्तिम पक्ष की बात करें तो नायक (भारत) की मृत्यु पर दर्शक को कोई छटपटाहट नहीं होती न ही कोई विरेचन का भाव होता है क्योंकि नायक ने ऐसा कुछ किया ही नहीं है कि दर्शक को ~~उसे~~ उसके पक्ष में कुछ अफसोस हो अतः तीसरी कसौटी पर भी खरा नहीं उतरता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु यह समझना जाता है कि भारतेंदु जी को कोई क्रांति लाने की इच्छा नहीं थी, उनको तो बस सोई हुई जनता को अपनी स्थिति के प्रति जागरूक करना था, ताकि समाज के अपने परिवेश को सुधारने को उत्प्रेरित हो, और वे इस उद्देश्य में काफी सफल भी रहे हैं अत: यह कह सकते है कि भारत-दुर्दशा निराशा का नाटक नहीं है बल्कि नवजागरण चेतना का नाटक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास को दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

मैला आंचल हिंदी का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है जिसकी रचना 1954 में फणीश्वरनाथ रेणु ने की थी, साथ ही रेणु जी ने पहली बार कथा जैसे आंचलिक उपन्यास भी मैला आंचल के आगे कीये है।

रेणु जी का कथा शिल्प आंचलिक है जो उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है। आंचलिक शिल्प का तात्पर्य होता है स्थानीय भाषा, लोक संस्कृति, सामाजिक स्थिति का वर्णन, वो भी स्थानीय शिल्प में।

मैला आंचल में आंचलिक शिल्प पूर्णत: स्पष्ट होता है जहां बात-बात पर त्यौहार बनाया जाना, भड़जिपों के गीत गाना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि है।

जैसे- "डिम डिकि डिकि"

साथ ही भाषा के स्तर पर रेणु जी ने अंग्रेजी शब्दों को विकृत कर ग्रामीण परिवेश के अनुसार ढालकर उनमें भी आंचलिकता लाती है

[Vice chairman - भैंस चैमन
Library - लायबेरी]

लोकगीतों का सुन्दर प्रयोग रेणु जी के शिल्प की अपनी विशेषता है-

"हथवा रंगावे सईया देहरी बैठाई गवले"

हास्य व्यंग्य के स्तर पर भी सुन्दर प्रयोग-

"बुढ़ापे में डाइन भी सीधी पड़ जाती है"

लोक संस्कृति के मुहावरे एवं लोकोक्ति का प्रयोग रचना

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को आंचलिक बनाता है।

"पुरुष उसके चारों ओर घूमता है जैसे कोल्हू का बैल"

सामाजिक पक्ष को भी बेबाकी के साथ प्रस्तुत करना भी रेणु जी के शिल्प का ही सुन्दर प्रमाण है।

"जोत जमीन जोर की, नहीं तो किसी और की"

आंचलिक उपन्यासों में रेणु जी ने सम्पूर्ण जातीय जीवन को ~~साहित्य~~ अपने उपन्यासों में समा लिया है जहाँ गोदान ने अपने समय की सभी परिस्थितियों का वर्णन किया है उसी का अनुसरण मैला आंचल ने स्थानीय स्तर पर किया है अतः यह कह सकते हैं। गोदान ने जहाँ जातीय परिस्थितियों को मैक्रो स्तर पर प्रस्तुत किया, मैला आंचल ने उसे माइक्रो स्तर पर दिखाया है

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कफन प्रेमचंद की 1936 में रचित कहानी है जब प्रेमचंद आदर्शवाद का रास्ता छोड़ पूर्ण यथार्थ को अपने साहित्य में जगह दे रहे थे। कफन दलित समुदाय के शोषण, उससे उत्पन्न संवेदनहीनता की कहानी है

कफन में घीसू एवं माधव के गरीबी, शोषण को पूरी मार्मिकता के साथ प्रदर्शित किया गया है साथ ही माधव, घीसू को चमार जाति का बताया गया है जिससे प्रेमचंद पर दलित विरोधी होने का आरोप लगता है

कफन में प्रेमचंद ने संवेदनहीनता को इतनी मार्मिकता के साथ दिखाया है कि पाठक की बेचैनी होने लगती है साथ ही समाज की विद्रूपताओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को भी दिखाया गया है

"जिसे जीते जी देह ढकने को चीथड़ा न मिला उसे मरने के बाद नया कफन चाहिए ये 5 रुपये पहले मिले होते तो दवा दारू भी हो जाती"

प्रेमचंद ने दिखाया है कि संवेदनहीनता गरीबी से उत्पन्न हुई है क्योंकि घीसू माधव के अलावा जो लोग काम भी करते थे उनकी भी हालत इनसे ज्यादा कुछ ठीक न थी।

साथ ही समाज विद्रूपताओं पर भी चोट की है जो लोग लोगों को लूटते हैं उनपर व्यंग्य किया गया है

"वह बैकुण्ठ न जायेगी तो क्या ये मोटे लोग जायेंगे जो दोनों हाथों से लोगों को लूटते हैं"

कफन पर आक्षेप है कि घीसू की जाति बताने की क्या आवश्यकता थी. गरीबी अपने आप में ही इन स्थितियों के लिए पर्याप्त है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालांकि प्रेमचंद के दलित विरोधी होने की बात पूर्णतः सही नहीं है क्योंकि सद्गति जैसी कहानी एवं गोदान उपन्यास में मातादीन-सिलिया प्रेम प्रसंग के माध्यम से प्रेमचंद ने अपनी दलित समर्थक सोच को प्रदर्शित किया है अतः प्रेमचंद दलित समर्थक तथा समाज की शोषणपरक व्यवस्था पर व्यंग्य करने वाले रचनाकार है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation